सत्य की जीत

(द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी)

लखनऊ, इटावा, बलिया, बिजनौर, झाँसी, बदायूँ, प्रतापगढ़, रामपुर, पीलीभीत जनपदों के लिए।

साराँश

उत्तर—'सत्य की जीत' द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी द्वारा लिखित एक विचार-

प्रधान खण्डकाव्य है, जिसकी कथावस्तु द्रौपदी के 'चीर-हरण' से सम्बन्धित है। द्रौपदी का चीर-हरण महाभारत की एक अत्यन्त लोकप्रिय एवं मार्मिक घटना है। इस कथा का आधार महाभारत के सभा-पर्व में दूत पर्व के 67वें अध्याय से 75वें अध्याय तक की कथा है। प्रस्तुत खण्डकाव्य का कथानक इस प्रकार है–

धर्मराज युधिष्ठिर दुर्योधन द्वारा आयोजित जुये में अपना सर्वस्व और स्वयं को हारने के पश्चात् द्रौपदी को हार जाते हैं। कौरव भरी सभा में द्रौपदी को लेकर निर्वस्त्र कर उसे अपमानित करना चाहते हैं। दुर्योधन दुःशासन से द्रौपदी को भरी सभा में लाने का आदेश देता है। दुःशासन द्रौपदी का केश खींचते हुए उसे भरी सभा में लाता है। द्रौपदी को यह अपमान असह्य हो जाता है। वह सिंहनी की भाँति दहाड़ती हुई दुःशासन को न्याय की चुनौती देती हुई सभा में उपस्थित होती है–

अरे! दुःशासन निर्लज्ज! देख तू नारी क्रोध।
किसे कहते उसका अपमान, कराऊँगी मैं उसका बोध।।
समझ कर एकाकी निःशंक, लिया मेरे केशों को खींच।
रक्त का घूँट पिये मैं मौन, आ गई भरी सभा के बीच।।

द्रौपदी की इस गर्जना से सभा में निस्तब्धता छा जाती है। खण्डकाव्य की कथा का प्रारम्भ बस यहीं से होता है। तदनन्तर द्रौपदी और दुःशासन में नारी-वर्ग पर पुरुष-वर्ग द्वारा किये गये अत्याचार, नारी और पुरुष की सामाजिक समता, उनकी शक्ति और उनके अधिकार, धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, न्याय-अन्याय, अस्त्र-शस्त्र आदि विविध विषयों पर अत्यन्त ही तर्क-संगत, प्रभावपूर्ण वाद-विवाद होते हैं। दुःशासन क्रोध से आग-बबूला हो उठता है और द्रौपदी से कहता है कि अब अधिक बकवास न करो, तुम्हें युधिष्ठिर हार चुका है। तुम्हें दासी की भाँति यहाँ रहना है। द्रौपदी पूछती है–

प्रथम महाराज युधिष्ठिर मुझे, या कि ये गये स्वयं को हार।
स्वयं को यदि, तो उनको मुझे, हारने का क्या था अधिकार?
नहीं था यदि उनको अधिकार, हारने का मुझको तो व्यर्थ।
हो रहा क्यों यह वाद-विवाद, समझ पा रही नहीं मैं अर्थ।।

द्रौपदी के इस तर्क से सभासद प्रभावित होते हैं। द्रौपदी अपना पक्ष प्रस्तुत करती हुई आगे कहती है कि धर्मराज युधिष्ठिर सरल हृदय हैं। वे कौरवों की कुटिल चालों से छले गये हैं। अतः सभा में उपस्थित धर्मज्ञ अपना निर्णय दें कि उन्हें कपट और अधर्म की विजय स्वीकार है अथवा सत्य और धर्म की। दुःशासन शास्त्र-चर्चा को शस्त्र-बल से दबा देना चाहता है। वह कहता है–

धर्म क्या है औ, क्या है सत्य, मुझे क्षण भर चिन्ता इसकी न।
शास्त्र की चर्चा होती वहाँ, जहाँ नर होता शस्त्र विहीन।।
शस्त्र जो कहे वही है सत्य, शस्त्र जो करे वही है कर्म।
शस्त्र जो लिखे वही है शास्त्र , शस्त्र बल पर आधारित है धर्म।।

दुःशासन के इस तर्क को सुनकर भीम की भुजाएँ फड़कने लगती हैं। कौरव पक्ष का नीतिज्ञ विकर्ण भी शस्त्र-बल पर आधारित इस नीति-विवेचन का विरोध करता है। वह इस बात पर बल देता है कि द्रौपदी द्वारा उठाये गये प्रश्न पर सभा गम्भीरतापूर्वक विचार करे तथा धर्म और न्याय-संगत निर्णय होना चाहिए।

कौरव पक्ष को विकर्ण के ये विचार स्वीकार नहीं हैं। वह अपने हठ पर अडिग है। युधिष्ठिर अपने उत्तरीय वस्त्र उतार देते हैं। उनकी देखा-देखी सभी पाण्डव अपने वस्त्र उतार देते हैं। विदुर और विकर्ण उदास हो जाते हैं। दुःशासन अट्टहास करता है। द्रौपदी मर्यादा का ध्यान रखते हुए सब कुछ चुपचाप देखती रहती है। जब सभासदों की ओर से कोई निर्णय नहीं होता, तो दुःशासन द्रौपदी को निर्वस्त्र करने के लिए हाथ आगे बढ़ता है। द्रौपदी उसे पापी कहकर डाँट देती है और कहती है कि भले ही यह शरीर चला जाय, किन्तु इस शरीर से कभी वस्त्र नहीं उतर सकता। यहाँ पर जो अन्याय हो रहा है, मैं उसे सहन नहीं कर सकती। सभासदों की राय बिल्कुल ही ऐसी नहीं है। यहाँ तो न्याय का मुँह बन्द है। यह शक्ति पर आधारित एकपक्षीय न्याय है। मैं सत्य, न्याय और धर्म का पक्ष लेकर चल रही हूँ। मुझे देखना है कि कौन मुझ पर हाथ उठाता है? दुःशासन द्रौपदी का चीर खींचने के लिए आगे बढ़ता है, किन्तु अनुपम तेजोप्त रूप में द्रौपदी उसे साक्षात् दुर्गा-सी प्रतीत होती है। वह काँप उठता है और चीर खींचने में अपने को असमर्थ पाता है।

द्रौपदी कौरवों को पुनः ललकारती है। सभी सभासद कौरवों की निन्दा करते हैं तथा द्रौपदी के सत्य और न्यायपूर्ण पक्ष की प्रशंसा करते हैं। अन्त में

धृतराष्ट्र पाण्डवों को मुक्त करने तथा उनका राज्य वापस करने का आदेश देते हैं। द्रौपदी के विचारों का समर्थन करते हुए सत्य, न्याय और धर्म की प्रतिष्ठा के लिए वे लोक-कल्याण को ही मानव-जीवन का परम लक्ष्य मानते हैं। वे पाण्डवों के प्रति अपनी शुभकामना प्रकट करते हैं।

Gyansindhu Coaching Classes

द्रौपदी का चरित्र चित्रण

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी कृत खण्डकाव्य 'सत्य की जीत' की नायिका द्रौपदी है। कवि ने उसे महाभारत की द्रौपदी के समान सुकुमार, निरीह रूप में प्रस्तुत न करके आत्मसम्मान से युक्त, ओजस्वी, सशक्त एवं वाक्पटु वीरांगना के रूप में चित्रित किया है। द्रौपदी की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं

1. **स्वाभिमानिनी** द्रौपदी स्वाभिमानिनी है। वह अपमान सहन नहीं कर सकती। वह अपना अपमान नारी जाति का अपमान समझती है। वह नारी के स्वाभिमान को ठेस पहुँचाने वाली किसी भी बात को स्वीकार नहीं कर सकती। 'सत्य की जीत' की द्रौपदी 'महाभारत' की द्रौपदी से बिल्कुल अलग है। वह असहाय और अबला नहीं है। वह अन्यायी और अधर्मी पुरुषों से संघर्ष करने वाली है।
2. **निर्भीक एवं साहसी** द्रौपदी निर्भीक एवं साहसी है। दु:शासन द्रौपदी के बाल खींचकर भरी सभा में ले आता है और उसे अपमानित करना चाहता है। तब द्रौपदी बड़े साहस एवं निर्भीकता के साथ दु:शासन को निर्लज्ज और पापी कहकर पुकारती है।
3. **विवेकशील** द्रौपदी पुरुष के पीछे-पीछे आँखें बन्द करके चलने वाली नारी नहीं है वरन् विवेक से काम लेने वाली है। वह भरी सभा में यह सिद्ध कर देती है कि जो व्यक्ति स्वयं को हार गया हो, उसे अपनी पत्नी को दाँव पर लगाने का अधिकार ही नहीं है। अत: वह कौरवों द्वारा विजित नहीं है।

4. **सत्यनिष्ठ एवं न्यायप्रिय** द्रौपदी सत्यनिष्ठ है, साथ ही न्यायप्रिय भी है। वह अपने प्राण देकर भी सत्य और न्याय का पालन करना चाहती है। जब दु:शासन द्रौपदी के सत्य एवं शील का हरण करना चाहता है, तब वह उसे ललकारती हुई कहती है—

"न्याय में रहा मुझे विश्वास,
सत्य में शक्ति अनन्त महान्।
मानती आई हूँ मैं सतत्,
सत्य ही है ईश्वर, भगवान।"

5. **वीरांगना** द्रौपदी विवश होकर पुरुष को क्षमा कर देने वाली असहाय और अबला नारी नहीं है। वह चुनौती देकर दण्ड देने को कटिबद्ध वीरांगना है—

"अरे ओ! दु:शासन निर्लज्ज!
देख तू नारी का भी क्रोध।
किसे कहते उसका अपमान,
कराऊँगी मैं उसका बोध।"

6. **नारी जाति का आदर्श** द्रौपदी सम्पूर्ण नारी जाति के लिए एक आदर्श है। दु:शासन नारी को वासना एवं भोग की वस्तु कहता है, तो वह बताती है कि नारी वह शक्ति है, जो विशाल चट्टान को भी हिला देती है। पापियों के नाश के लिए वह भैरवी भी बन सकती है। वह कहती है—

"पुरुष के पौरुष से ही सिर्फ,
बनेगी धरा नहीं यह स्वर्ग।
चाहिए नारी का नारीत्व,
तभी होगा यह पूरा सर्ग।"

सार रूप में कहा जा सकता है कि द्रौपदी पाण्डव-कुलवधू, वीरांगना, स्वाभिमानिनी, आत्मगौरव सम्पन्न, सत्य और न्याय की पक्षधर, सती-साध्वी, नारीत्व के स्वाभिमान से मण्डित एवं नारी जाति का आदर्श है।

युधिष्ठिर का चरित्र चित्रण

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के नायक रूप में युधिष्ठिर के चरित्र को स्थापित किया गया है। द्रौपदी एवं धृतराष्ट्र के कथनों के माध्यम से युधिष्ठिर का चरित्र प्रकट हुआ है। 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य में युधिष्ठिर का चरित्र महान् गुणों से परिपूर्ण है।

उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

1. **सरल-हृदयी व्यक्तित्व** युधिष्ठिर का व्यक्तित्व सरल हृदयी है तथा अपने समान ही सभी अन्य व्यक्तियों को भी सरल हृदयी समझते हैं। इसी गुण के कारण वे दुर्योधन और शकुनि के कपट रूपी माया जाल में फँस जाते हैं और इसका दुष्परिणाम भोगने के लिए विवश हो जाते हैं।
2. **धीर-गम्भीर** युधिष्ठिर ने अपने जीवन काल में अत्यधिक कष्ट भोगे थे, परन्तु उनके स्वभाव में परिवर्तन नहीं हुआ। दु:शासन द्वारा द्रौपदी का चीर-हरण व उसका अपमान किए जाने के पश्चात् भी युधिष्ठिर का मौन व शान्त रहने का कारण उनकी कायरता या दुर्बलता नहीं थी, अपितु उनकी धीरता व गम्भीरता का गुण था।
3. **अदूरदर्शी** युधिष्ठिर सैद्धान्तिक रूप से अत्यधिक कुशल थे, परन्तु व्यावहारिक रूप से कुशलता का अभाव अवश्य है। वे गुणवान तो हैं, परन्तु द्रौपदी को दाँव पर लगाने जैसा मूर्खतापूर्ण कार्य कर बैठते हैं। परिणामस्वरूप इस कर्म का दूरगामी परिणाम उनकी दृष्टि से ओझल हो जाता है और चीर-हरण जैसे कुकृत्य को जन्म देता है। इस प्रकार युधिष्ठिर अदूरदर्शी कहे जाते हैं।

4. **विश्व-कल्याण के अग्रदूत** युधिष्ठिर का व्यक्तित्व विश्व-कल्याण के प्रवर्तक के रूप में देखा गया है। इस गुण के सन्दर्भ में धृतराष्ट्र भी कहते हैं कि—

"तुम्हारे साथ विश्व है, क्योंकि तुम्हारा ध्येय विश्व-कल्याण।"

अर्थात् धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर के साथ सम्पूर्ण विश्व को माना है, क्योंकि उनका उद्देश्य विश्व-कल्याण मात्र है।

5. **सत्य और धर्म के अवतार** युधिष्ठिर को सत्य और धर्म का अवतार माना गया है। इनकी सत्य और धर्म के प्रति अडिग निष्ठा है। युधिष्ठिर के इसी गुण पर मुग्ध होकर धृतराष्ट्र ने कहा कि हे युधिष्ठिर! तुम श्रेष्ठ व धर्मपरायण हो और इन्हीं गुणों को आधार बनाकर बिना किसी भय के अपना राज्य सँभालो और राज करो।

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि युधिष्ठिर इस खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र व नायक हैं, जिनमें विश्व कल्याण, सत्य, धर्म, धीर, शान्त व सरल हृदयी व्यक्तित्व का समावेश है।